आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:04/03/2023; Published:24/03/2023

साक्षात्कार

डॉ. मुक्ता से मुक्त बातें

- डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी
प्रवक्ता,
विश्वविद्यालय कालेज, मंगलूर

समकालीन रचनाकार मुक्ता संवेदनशील और जागरूक लेखिका है। संवेदनशील व्यक्ति हमेशा समाज की ओर सूक्ष्म दृष्टि डालता है और समाज में स्थित समस्याओं का ध्यानपूर्वक अवलोकन करता है। मुक्ता भी इस बात से अलग नहीं थी। उन्होंने समाज में स्थित समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया हैं। उनकी कहानियों का कथ्य अलग किस्म की है। मुक्ता ने रोजमर्रा के जीवन में आनेवाली समस्याओं को अपनी कहानियों में स्थान दिया। वे बनारस, करनाल, दिल्ली जैसे कई स्थानों में रह चुकी है। इन शहरों के अनुभवों को उन्होंने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों में उनके बचपन के अनुभव, कर्मभूमि का प्रभाव, आसपास घटित घटनाओं की झलक है। शोधकार्य के दौरान उनसे जो मुलाकात हुई उसी साक्षातकार का ब्यौरा इस प्रकार है-

- **ज्योति: लेखन के प्रति अभिरूचि कैसे जागी?**
- **मुक्ता**: मुझे बचपन से ही चित्रकला और कविता लिखने का शौक था। मेरे माता-पिता मुझे डाक्टर बनाना चाहते थे। मैं ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से फार्मासी में स्नातक (बी.फार्म) किया है। हमने छठी कक्षा में कविताऍं लिखी थी। मेरे माता-पिता ने बचपन में मुझे कविता लिखने के लिए उत्साहित नहीं किया। उनका यह मानना है कि मुझे पढाई में ध्यान देना चाहिए। लेकिन मेरी माँ आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पौत्री है। उन्होंने बी.एच.यू से हिन्दी एम.ए में सर्वोच्य द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। और राजकीय बालिका विद्यालय में प्रधानाचार्य थी। इसलिए घर का वातावरण साहित्यिक था। घर में सदैव साहित्यकारों का आना होता था। मैं जब विश्वविद्यालय में पढ रही थी उस समय मैंने कविताएँ लिखी थी। वैसे हमारा कोर्स कठिन था। कविता लिखने के लिए समय नहीं मिलता था। जब भी कोई भाव मन में आता कविता लिखती थी। उस समय जो कविताऍ मैंने लिखा था उनमें से कुछ कविताएँ मेरी पहली कविता संग्रह में प्रकाशित है। उसी दौरान हमने एक कहानी

भी लिखा था जो बहुत समय के बाद प्रकाशित हुई। हम जब भी लिखते थे तो अंदर की बेचैनी को एक राह मिलती थी।

- **ज्योति: आपकी पहली कहानी कौन-सी है?**
- **मुक्ता:** संयोग से 'हरिगंधा' पत्रिका के संपादक उस समय हमारे घर आये थे। उन्हें जब पता चला कि हम भी लिखते है तो उन्होंने मेरी कहानी अपनी पत्रिका में प्रकाहित करने की बात की। 'केक्टस भरी जिन्दगी' मेरी पहली कहानी है जो 'हरिगंधा' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उस कहानी को मैं ने आज तक किसी कहानी संग्रह में नहीं दिया। आगामी संग्रह में देन का विचार है।
- **ज्योति: मैं ने सुना है कि आप को नौकरी छोडना पडा। क्यों?**
- **मुक्ता:** पढाई के बाद हम उत्तरकाशी की राजकीय पोलिटेकनिक में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। उसी पोलिटेकनिक में हमारे पति विभागाध्यक्ष थे। उस समय भी मैं कहानियाँ लिखती थी लेकिन उसे छापने नहीं भेजती थी। उस समय हमारी बेटी भी थी। उस समय हमारी बेटी भी थी। कई वर्षों के बाद पति की नियुक्ति करनाल में हुई। इस कारण से न चाहते हुए भी मुझे नौकरी से इस्तीफा देना पडा। वह जमाना आज की तरह नहीं था। उस समय तो महिलाओं को नौकरी करने के लिए परिवार से सहयोग नहीं मिलता था। बहुत ही कम महिलाएँ उस समय नौकरी करती थी। हमारे ऊपर भी बहुत दबाव पडा तो हमने नौकरी छोड दी।
- **ज्योति: आपको नृत्य करने का शौक था। आपने उसे क्यों छोडा?**
- **मुक्ता:** मैंने कथक नृत्य में प्रवीण किया है। मैं ने करनाल में 'आम्रपाली, नामक नृत्य स्कूल शुरू किया था। करनाल में टागोर बाल निकेतन इन्टर स्कूल के प्राचार्य मिस रईस के कहने पर मैं उस स्कूल के बच्चों को दो घंटों के लिए नृत्य सिखाने के लिए जाती थी और घर में बच्चों को नृत्य सिखाती थी। उस समय हमारी बेटी स्कूल जाती थी। मेरे बॅटे का जन्म हुआ। एक साल के बाद मेरे पति का स्थानांतरण हुआ। मुझे नृत्य स्कूल बंद करना पडा और मैं अपने परिवार सहित दिल्ली आ गयी।
- **ज्योति: आपकी साहित्यिक यात्रा के बारे में बताइए।**
- **मुक्ता:** मैं ने दिल्ली में लेखन का सिलसिला लगातार जारी रखा। आकाशवाणी दिल्ली से मेरी कहानियाँ प्रसारित होती थी। मै लगातार जनसत्ता में लिखती हूँ। जनसत्ता में मेरे लेख, समीक्षा, कहानी आदि छपती थी। वैसे मेरी कहानियाँ तो लग-भग सभी प्रतिष्टित पत्रिकाओं में छपती थी। उस समय राजेन्द्र यादव 'हंस' पत्रिका के संपादक थे। मेरी कहानियाँ 'हंस' में भी प्रकाशित होती थी। उस समय मंगलेश डबराल 'जनसत्ता' के साहित्यिक संपादक थे। मैंने काशी की विधवाओं पर, संगीत पर एवं अन्य विषयों पर जनसत्ता में फीचर लिखा था। मेरे निबंध, फीचर, लेख 'पाठ समानांतर' नामक मेरी किताब में प्रकाशित हैं। मैंने कर्नल सहगल(आजाद हिन्द फौज में सुभाष चंद्र बोस के निकट सहयोगी) और कई संगीतकारों का साक्षात्कार भी किया है। सभी साक्षात्कार औ समीक्षाएँ कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी, जो 'शब्द और लय' नामक मेरी किताब में संग्रहित हैं। इस तरह कई दशक बीत गये मुझे लिखते हुए।

- **ज्योति: आचार्य रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान के बारें में बताइए।**
- **मुक्ता:** मैं आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रपौत्री हूँ। उनकी विरासत को सहेजना भी था। 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान' की स्थापना उनके छोटे बेटे गोकुल चंद्र शुक्ल ने की है। मेरी माँ संस्था की मंत्री थी। मेरे पिता भी मंत्री रहे। संस्था द्धारा नया मानदंड नामक पत्रिका प्रकाशित होती थी। माता-पिता की उम्र बढ रही थी। संस्था में कार्यभार अधिक था। संस्था की जिम्मेदारी उठाने के लिए मैं बनारस आ गई। मैं आचार्य रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान की सह निदेशक बनी।माता-पिता के बाद अब मैं संस्था की अध्यक्ष हूँ। मैं संस्थापक सदस्य भी हूँ। इस तरह मेरा लेखन कार्य चलता रहा। बच्चें बडे हुए, पढ-लिख लिया। उनकी शादी हुई और उनके भी बच्चें हुए। इस तरह से एक लंबे संघर्ष का समय गुजरा। बस यह संतोष है कि इससे पीढीयों को उर्जा मिलती है। पीढियों को एक संदेश मिलता है। हमारी जो अभिव्यक्ति है वही पीढियों के संदेश का माध्यम है।
- **ज्योति: 'आधा कोस' कहानी में आपने दलितों की जीवन दशा को बताने का प्रयास किया है। सवर्ण होकर आपको दलितों के बारे में लिखने की प्रेरणा कैसे मिली?**
- **मुक्ता:** यह बात को सही है कि 'आधा कोस' कहानी दलितों की कहानी है। नारी चाहे सवर्ण हो या दलित उसकी स्थिति दयनीय है। जहाँ शोशण है, जहाँ हाशिये का समाज है उन पर मेरी दृष्टि हमेशा बनी रही हैं। मेरी कहानी 'कुसुम कथा' में ब्राह्मण महिला शोषण का शिकार है। 'जनम दुख' कहानी भी दलित महिला की कहानी है। इस कहानी की नायिका पूरे गाँव को चुनौती देती है। सजग और चैतन्य महिला होने पर भी वह शोषण का शिकार हो जाती है। चाहे महिला हो या पुरूष भावुकता और कोमलता उसके लिए कभी-कभी घातक होती है। महिला तो समझती है कि प्रेम हो रहा है, लेकिन दरअसल वह प्रेम नहीं एक साजिश है। नारी और दलित उत्तर वैदिक युग से ही शोषण का शिकार रहे हैं। उस समय उनको शिक्षा से वंचित किया गया था। इस कारण उनके अंदर जागरूकता नहीं आ पाई। वे धीरे-धीरे उठने की कोशिश कर रहे हैं। महिला सवर्ण हो या दलित दोनों ही शोषण का शिकार हैं।
- **ज्योति: विश्व प्रसिद्ध भदोही के बुनकरों की दुर्दशा का चित्रण 'काठलूम अपने अपने' कहानी में है। सरकार ने बुनकरों की समस्याओं के समाधान के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं। फिर भी बनकर या तो गरीब है या मजदूर बन रहे हैं। इस का क्या कारण है?**
- **मुक्ता:** इस का कारण साम्राज्यवादी वैशवीकरण है। भारतीय समाज में बहुराष्ट्रीय कंपनी के आक्रमण से हमारे कुटीय उद्योग जैसे लकडी का खिलौना बनाना, कालीन का उद्योग, बनारसी साडी का उद्योग आदि पर प्रभाव पडा। इस से बुनकरों को बडी समस्या हुई। बनारसी साडी के बुनकरों को जो कच्चा माल मिल रहा था उसकी कमी हो गई। कालीन उद्योग के क्षेत्र में मशीन आई तो हाथ से कालीन बुननेवाले बुनकरों को उनकी मेहनत की लागत नहीं मिली। मशीनीकरण से समस्या बढी। करघा की जगह पर मशीन आया। बिजली का बिल बढने से बुनकरों को और समस्या हुई। उनकी समस्या के समाधान के लिए कई योजनाएँ तो बनाई हैं, लेकिन योजनाएँ तो सिर्फ कागज पर ही

रहती है। उसका लाभ लोगों तक कहाँ पहुचता है? बनारसी साडी, कलीन का उद्योग उजड गया। कोरोना की वजह से पर्यटक नहीं आ रहे हैं जिस से उनकी आमदनी लग-भग रुक गई है। अब तो उनको भूखे मरने की नौबत् आई है। सरकार को इनकी समस्याओं पर ध्यान देना होगा। बुनकरों को उनकी मेहनता का सही दाम मिलना चाहिए नहीं तो उन्हें और कठिनाईयों का सामना करना पडेगा। परिस्थिति को न झेल पाने से कई बुनकरों ने आत्महत्या किया था। कुछ लोग मजबूर होकर मजदूरी करने लगे है। इस कहानी के सारे पात्र हमारे अनुभवों से गुजरे हैं।

- **ज्योति: 'कहो देवयानी' कहानी स्त्री अस्मिता की कहानी है। इस में 'लक्ष्मीना' नामक हाथिनी का चरित्र है। हाथिनी के चरित्र का कारण क्या है?**
- **मुक्ता:** ऐसा है हमारे यहाँ पशुओं को एक ऐसी श्रेणी में रखा जाता है। हाल ही में एक घटना केरल में हुई है।' कहो देवयानी' स्त्री अस्मिता की कहानी है, लेकिन कई बिंदूओं पर लक्ष्मीना का दुख देवयानी के दुख से जुड गया है। इस कारण देवयानी को लक्ष्मीना की याद बार-बार आती है। लक्ष्मीना भी मेरे अनुभव का हिस्सा है। म्रेरे दादाजी के घर में लक्ष्मीना नामक हाथिनी थी। बचपन में उस के साथ मेरे आत्मीय अनुभव जुडे हुए है। उस कहानी में देवयानी का दोस्त है, जो सामंतवादी सोचवाला है। पुरूष हर बार अपनी ही प्रथमिकता चाहता है। आज की नारी पुरूषसत्तादारी सोच को बर्दाश्त नहीं करती है। वह अपनी अस्मिता, स्वाभिमान से समझौता नहीं करती है।
- **ज्योति: आपकी कई कहानियों में कलाकारों की समस्याओं का चित्रण है। स्वयं कलाकार होकर उनकी समस्याओं के बारें में आपका क्या विचार है?**
- **मुक्ता:** मैं खुद कलाकार हूँ। मैं ने उनकी पीडा को बहुत करीब से देखा है। उनके यथार्थ को महसूस किया है। कई अनुभवों से गुजरने के बाद ही इन कहानियों ने जन्म लिया है। जैसे 'पलाश वन के घुँघुरू' कहानी के नायक का विपन्न जीवन कही न कही मेरे कथक गुरू का जीवन था। उनको जो सम्मान मिलना था वह नहीं मिला। बहुत विपन्नता से उनका जीवन गुजरा। इस के लिए कौन दोषी है। कलाकार राजा के आश्रित होते थे। वे अपने घर-गहस्थी की चिंता न करके पूर्ण समर्पण भाव से कला की साधना करते थे। आज तो युग बदल गया है। आज कलाकार दोहरी मार से पीडित है। उनकी कला को न मंच मिल रहा है नाही कोई आमदनी। इसलिए कलाकारों ने कला की साधना ही छोड दी हैं। आज के माहौल में शास्त्रीय संगीत बिलकुल हाशिये पर चला गया है। प्रसिद्ध समीक्षक गोपाल राय ने इस बात को रेखांकित किया है- " इस तरह कलाकारों को लेकर पहली बार कहानियाँ लिखी गई है।" हम ने कलाकारों को केन्द्र में रखकर उनकी पीडा को अभिव्यक्ति दी है।
- **ज्योति: आपने 'सिलवासा' नामक वृतचित्र का निर्माण किया है। 'तारपा' कहानी में सिलवास के आदिवासियों का चित्रण है। वृत्तचित्र और कहानी में क्या कोई संबंध है।**
- **मुक्ता:** सिलवास के आदिवासियों पर वृत्तिचत्र बनाने के दौरान हम वहाँ के संस्कृति से परिचित हुए। वह रहने पर ज्ञात हुआ कि आदिवासियों का शोषण किस प्रकार हो रहा है। वहाँ के अनुभवों के आधार पर 'तारपा' कहानी को लिखा।

- **ज्योति: आपको आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी पर वृत्तचित्र बनाने का विचार कैसे आया?**
- **मुक्ता:** मैं शुक्ल जी की प्रपौत्री हूँ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की जीवनी उनके भतीजे चंद्रशेकर शुक्ल ने लिखा था। जब मैं लोगों से मिलती थी तो लोग शुक्ल जी के बारे में ऐसे संस्मरण सुनाते थे जिस में सत्यांश कम था। ये बाते मुझे अंदर से बहुत उद्देलित करती थी। इन्ही बातों को लेकर मेरे मनमें शुक्ल जी के जीवनी लिखने का विचार आया। मैने शुक्ल जी के शिष्यों से बार करना, शुक्ल जी से जुडी हुई चीजों की पडताल करना शुरू किया। उसी समय दूरदर्शन में ग्रेट मास्टर्स नामक एक श्रृंखला चल रही थी, जिस में बडे-बडे संगीतकारों को दिखाया जा रहा था लेकिन किसी साहित्यकार का नाम नहीं था। मैं अपनी कहानी की रिकार्डिंग के लिए दिल्ली आकाशवाणी गयी थी। वहाँ एक मित्र से मिलने के लिए दूरदर्शन में गई। वही मेरी मुलाकात कार्यक्रम के निदेशक से हुई। उन्होंने मुझे ग्रेट मास्टर्स कार्यक्रम के लिए वृत्तचित्र का प्रोजेक्ट जमा करने की सलाह दी। मेरी फिल्म को स्वीकृति मिल गई। १९९३ में 'आचार्य रामचंद शुक्ल' वृत्तचित्र का दूरदर्शन पर प्रसार हुआ तब पूरे भारत से मुझे प्रशंसा मिली। इस कार्यक्रम से संबंधित मेरे साक्षात्कार पूरे देश के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। एक तरह से व्यापक ख्याति उस वृत्तचित्र को मिली। उसके बाद डी.डी. भारती के लिए विद्यानिवास मिश्र के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र 'छितवन की छाँह' का निर्देशन किया। फिल्म के बाद आचार्य शुक्ल के जीवनी 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' प्रकाशन विभाग दिल्ली से प्रकाशित हुई।
- **ज्योति: आपने रूस, ब्रिटेन आदी देशों की साहित्यिक यात्राएँ की है। वहाँ की नारी और भारतीय नारी में क्या अंतर है?**
- **मुक्ता:** हर देश की अपनी अलग पहचान है। समस्याएँ भी अलग ढंग की हैं। महीलाओं की समस्या सिर्फ भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी है। मैं ने खास तौर पर थाईलेंड में देखा की वहाँ की महिलाओं की समस्या दूसरे ढंग की है। बैंकाक को 'सक्स हब' कहते हैं। यह एक षडयंत्र है। मैंने इस के बारे में लिखा है। थाईलेड एक ऐसा देश है जहाँ पुरूष से अधिक महिलाएँ काम करती है। महिलाओं ने ही वहँ का आर्थिक ढांचा संभाला है। उनके बारे में ऐसी बाते पूरे अंतराष्ट्रीय स्तर पर फैला दी गई है यह बहुत गलत है। इस का मुझे बहुत दुख है। मैं ने वहाँ की एक पत्रिक्श में, अपने साक्षात्कार में ये बाते उठाई । थाईलेंड में सेना में भी महिलाएँ है। उनकी बात नहीं हो रही हैं। कुछ महिलाएँ देह व्यपार में जो जबरदस्ती से ढकेली जा रही हैं। कोई भी स्वेच्छा से इस काम के लिए नहीं जाती है। थाईलेंड एक विकसित देश है। उनका पारीवारिक ढांचा बिलकुल हमारे देश की तरह है। उनक अपने माता-पिता, बडे-बुजुर्ग के प्रति जो समर्पण भाव है उतना समर्पण भाव हमारे देश में भी नहीं है। रूस और इटली तो विकसित देश हैं। वहाँ तो इस तरह की बाते नहीं है। एशिया के देशों और पश्चिम के देशों के मूल्यों में अंतर है । बेहरीन में महिलाओं का दैहिक शोषण बहुत है। मस्कत में पर्दा बहुत है। विकसित देशों में महिलाएँ बहुत आगे हैं।
- **ज्योति: भारतीय समाज में नारी ही नहीं पुरूष भी शोषित है इस के बारे में आपका क्या विचार है?**

- **मुक्ता:** 'काठलूम अपने अपने', 'बेचलर की माँ' कहानियाँ पुरूष शोषण से संबंधित है।

हमारे समाज में अगर कोई पुरुष अविवाहित है तो उसका दूसरे ढंग से शोषण होता है। उसको परिवार में स्थान नहीं दिया जाता है। दलित पुरूषों का शोषण होता हैं। महिलाएँ अपने पुरूष मालिक को संतुष्ट करने के लिए महिलाओं का शोषण करती हैं। यह एक तरह की गुलाम मानसिकता है।

- **ज्योति: शिक्षा नारी का सशक्त हथियार है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि आज सुशिक्षित नारी पर भी अत्याचार हो रहा है। आपके अनुसार इस का मुख्य कारण क्या है?**
- **मुक्ता:** पुरूष जब तक अपने आप को पुरूषसत्तात्मक मानासिकता की सोच से मुक्त नहीं करेगा तब तक यह शोषण होता ही रहेगा। नारी को आर्थिक स्वतंत्रता तो मिल गई लेकिन उसे आर्थिक आजादी कहाँ मिली है? उसकी अपनी कमाई पर अधिकार नहीं है। महिलाओं को अपने निर्णय खुद लेने होगें। पढ.-लिखी नारी को अपने अधिकारों की माँग करनी चाहिए तभी बदलाव संभव है। अगर वह सर्तक नहीं रहेगी तो वह शोषित होती रहेंगीं। महिलाओं को खुद जागरूक होना होगा।
- **ज्योती: नारी अपने परिवार के साथ व्यवसाय को संभालती है। इस से उस पर दोहरा बोझ है और अक्सर उसका स्वाभाव चिड-चिड हो जाता है। इस से बाहर आने की कोई युक्ति बताइए।**
- **मुक्ता:** पुरूष और नारी को मिलकर काम का बँटवारा करना होगा। रसोई की जिम्मेदारी सिर्फ नारी की नहीं है। पुरूष को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। दोनों मिल-जुलकर काम करें तो दोनो का बोझ कम होगा। यह बात बचपन से ही माँ को बच्चों को समझाना होगा। माँ को बेटा-बेटी दोनों को रसोई का काम सिखाना है। बच्चों को भी दोनो को संभालना होगा। दोनो मिल-जुलकर काम करें यही एक मात्र विकल्प है।

****